



ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...



सतत् जीविकोपार्जन योजना से
आत्मनिर्भरता की राह पर पार्वती देवी
(पृष्ठ - 02)



योजना से जुड़कर खुशहाल हुई
गुंजा देवी की जिंदगी
(पृष्ठ - 03)



सतत् जीविकोपार्जन योजना से
जीवन में रोशनी :
निर्मला देवी की प्रेरणादायक कहानी
(पृष्ठ - 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना एक नई राह

माह - अप्रैल 2025 || अंक - 45

बिहार में सतत् जीविकोपार्जन योजना : स्वरोजगार से समृद्धि का सफर

बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी सतत् जीविकोपार्जन योजना का क्रियान्वयन जीविका के माध्यम से पूरे राज्य में प्रभावी ढंग से किया जा रहा है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य बिहार के अत्यंत निर्धन परिवारों, विशेषकर पूर्व में शराब और ताड़ी के उत्पादन एवं बिक्री से जुड़े परिवारों, अनुसूचित जाति/जनजाति और अन्य वर्ग के अत्यंत निर्धन परिवारों को स्थायी आजीविका के साधनों से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाना है। योजना के तहत प्रत्येक लाभार्थी परिवार को जीविकोपार्जन गतिविधियों हेतु दो से तीन क्वॉटों में अधिकतम दो लाख रुपये तक की सहायता उपलब्ध कराई जाती है। इसके साथ ही इन परिवारों को विभिन्न सरकारी योजनाओं से जुड़ाव कराने तथा योजना का लाभ दिलवाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है ताकि उनका आर्थिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित किया जा सके।

अब तक बिहार में 2,01,218 परिवारों को सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत चिन्हित किया गया है, जिनमें से 45,994 परिवार पारंपरिक रूप से ताड़ी और देशी शराब के व्यवसाय से जुड़े थे। इनमें से 1,91,164 परिवारों को एकीकृत परिसंपत्ति सृजन हेतु सहयोग प्रदान किया गया है। राज्य भर में दीदियों के बीच विभिन्न गतिविधियों के तहत कुल 25 करोड़ 55 लाख रुपये की राशि का वितरण किया गया है, जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त बन रही हैं और अपनी सामाजिक स्थिति को बेहतर कर रही हैं।

बिहार राज्य के सभी जिलों में योजना से जुड़कर लक्षित परिवारों द्वारा सूक्ष्म व्यवसाय, पशुपालन गतिविधि के तहत गव्य पालन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, तथा कृषि कार्य इत्यादि गतिविधि पर कार्य किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त परिवारों द्वारा सजावट सामग्री, खिलौना और मिट्टी से निर्मित वस्तुओं का निर्माण एक लोकप्रिय स्वरोजगार गतिविधि बन गई है। राज्य में इस योजना से जुड़े 66 परिवारों द्वारा मिट्टी से मूर्ति, दिया, खिलौने और कुप्पी जैसे उत्पादों का निर्माण किया जा रहा है और इन व्यवसायों से ये परिवार औसतन प्रतिमाह 10 हजार रुपये की आमदनी अर्जित कर रहे हैं। इससे न केवल पारंपरिक कारीगरी को बढ़ावा मिल रहा है बल्कि ग्रामीण परिवारों को स्थायी आय का स्रोत भी उपलब्ध हो रहा है।

हस्तशिल्प के क्षेत्र में भी सतत् जीविकोपार्जन योजना की लाभार्थी दीदियों ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। लगभग चार दर्जन परिवार अब फुदना, डोरी, अनंत सामग्री, झोला, पर्दा, गेट झालर और गुलदस्ता जैसे उत्पादों का निर्माण कर रहे हैं। इस कार्य से दीदियों को औसतन 12 से 15 हजार रुपये प्रतिमाह की आय हो रही है, जिससे वे अपने परिवारों को बेहतर जीवन दे पा रही हैं और आत्मनिर्भरता की दिशा में मजबूत कदम बढ़ा रही हैं।

बिहार के कई जिलों का बांस से बनी सामग्री का निर्माण भी सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत एक सशक्त स्वरोजगार विकल्प बनकर उभरा है। 230 परिवार बांस से सूप, टोकरी और सजावटी वस्तुओं का निर्माण कर रहे हैं, जिससे उन्हें प्रतिमाह 8 से 10 हजार रुपये की आय हो रही है। बांस शिल्प बिहार की पारंपरिक धरोहर का हिस्सा है, और इस पहल ने इसे नई ऊर्जा प्रदान की है।

राज्य में इस योजना के तहत वित्तीय सहायता को और मजबूत करते हुए 1,897 दीदियों के बीच 9 करोड़ 30 लाख रुपये की जीविकोपार्जन निवेश निधि के चेक वितरित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, दो दीदियों को ई-रिक्शा की चाभी प्रदान की गई है, ताकि वे स्वरोजगार के माध्यम से आजीविका चला सकें। एक दीदी को मिक्की माउस झूला भी हस्तगत कराया गया, जो उनके व्यवसाय की शुरुआत के लिए एक प्रेरक कदम है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बिहार के गांवों में सामाजिक और आर्थिक बदलाव की एक नई कहानी लिखी है। स्वरोजगार के माध्यम से दीदियां न केवल अपने परिवार की स्थिति को सुधार रही हैं, बल्कि पूरे समुदाय में बदलाव की प्रेरणा बन रही हैं। इस योजना ने बिहार को आत्मनिर्भरता के नए

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिली नई पहचान

रिंकु देवी, बिहार के अरवल जिले के बंशी प्रखंड के खटाँगी गाँव की रहने वाली हैं। उनका जीवन कभी कठिनाइयों से भरा हुआ था। बहुत कम उम्र में उनकी शादी हो गई थी। उनके पति दिहाड़ी मजदूरी कर परिवार चलाने की कोशिश करते थे, लेकिन आमदनी इतनी कम थी कि दो वक्त का भोजन और बुनियादी जरूरतें भी पूरी नहीं हो पाती थीं। रिंकु देवी हमेशा चाहती थी कि उनके पास ऐसा रोजगार हो जिससे वे अपने बच्चों को पौष्टिक भोजन, शिक्षा और बेहतर जीवन दे सकें।

इसी दौरान, बिहार सरकार की सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत विशाल जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा उनकी खराब आर्थिक स्थिति को देखते हुए उन्हें लाभार्थी के रूप में चुना गया। योजना के अंतर्गत रिंकु देवी को 20,000 रुपये की सहायता राशि दी गई, जिससे उन्होंने एक किराना दुकान के लिए सामान खरीदा और अपना छोटा व्यवसाय शुरू किया।

धीरे-धीरे रिंकु देवी की मेहनत रंग लाई। दुकान से हुई आय के सहारे उन्होंने बकरियाँ भी खरीद लीं। आज उनके पास कई बकरियाँ हैं। बकरी पालन एवं बिक्री कर वह अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर रही हैं। उनके इस उद्यम में सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत कार्यरत संसाधन सेवी ने भी निरंतर उनका मार्गदर्शन और सहयोग किया।

अब रिंकु देवी के पास अपना सुरक्षित घर, शौचालय, स्वच्छ पेयजल, बिजली, और जीविका समूह से जुड़ाव है। उनके बच्चे पढ़ने के लिए स्कूल जाते हैं। उनका परिवार खुशहाल जीवन जी रहा है। रिंकु देवी की कहानी इस बात का उदाहरण है कि सरकारी योजनाएँ जब सही हाथों तक पहुँचती हैं, तो वे किसी का जीवन पूरी तरह बदल सकती हैं।



सतत् जीविकोपार्जन योजना से आत्मनिर्भरता की राह पर पार्वती देवी

कटिहार जिला के कोढ़ा प्रखंड अंतर्गत उत्तरी सिमरिया पंचायत के शीतलपुर गांव की रहने वाली पार्वती देवी एक साहसी और प्रेरणादायक महिला हैं। वे मधु जीविका महिला ग्राम संगठन और दुर्गा जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं। उनकी शादी 18 वर्ष की उम्र में जनार्दन मंडल से हुई थी, लेकिन पति की बीमारी से असमय मृत्यु के बाद वे पूरी तरह बेसहारा हो गईं। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और मेहनत-मजदूरी कर अपने एक बेटा और दो बेटियों की परवरिश एवं उनकी पढ़ाई सरकारी विद्यालय में करवाती रहीं।

इस बीच मधु ग्राम जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा पार्वती देवी को सतत् जीविकोपार्जन योजना में शामिल किया गया। रोजगार करने के लिए उन्हें प्रशिक्षित भी किया गया। जून 2023 में उन्हें योजना के तहत 10,000 रुपये का विशेष निवेश निधि और 20,000 रुपये का जीविकोपार्जन निवेश निधि प्राप्त हुआ। जिससे उन्होंने अपने गांव शीतलपुर में एक किराना दुकान शुरू की, जिसे वे प्रतिदिन नियमित रूप से चलाती हैं। दुकान खुलने के उपरांत जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में योजना के तहत सात माह तक उन्हें प्रति माह एक हजार रुपये प्रदान किया गया। बाद में वह इस दुकान में श्रृंगार सामग्री भी बेचने लगी। इस व्यवसाय से उनकी औसत मासिक आमदनी 4,750 हो गई है।

दुकान की कमाई से उन्होंने एक बकरी और चौकी खरीदी है तथा बैंक में 15,000 रुपये की बचत भी की है। उनके पास सुरक्षित घर, शौचालय, ट्यूबवेल से जल, बिजली और गैस कनेक्शन की सुविधाएं उपलब्ध हैं। वे अपने लेन-देन का हिसाब खुद रखने में सक्षम हैं।

पार्वती देवी बताती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उन्हें आत्मनिर्भरता की नई राह दिखाई है। वह चाहती हैं कि उनके बच्चे स्नातक की पढ़ाई पूरी कर सरकारी नौकरी प्राप्त कर आत्मनिर्भर बनें।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिली नई दिशा



योजना से जुड़कर खुहाल हुई गुंजा देवी की जिंदगी

जमुई जिला के खैरा प्रखंड अंतर्गत हरणी पंचायत के हरणी गांव की रहने वाली गुंजा देवी, आज आत्मनिर्भर और सशक्त महिला के रूप में उभरकर सामने आई हैं। विकास जीविका स्वयं सहायता समूह, कमल जीविका महिला ग्राम संगठन और मुस्कान जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ की सदस्य गुंजा देवी की उम्र 35 वर्ष है। उनके पति स्व. विनोद ताँती मजदूरी कर घर चलाते थे, लेकिन कुछ वर्ष पूर्व उनके असामयिक निधन से परिवार की स्थिति बेहद दयनीय हो गई थी।

पति की मृत्यु के बाद उनके परिवार की स्थिति और खराब हो गई, तब कमल जीविका महिला ग्राम संगठन के माध्यम से गुंजा देवी को सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। योजना के तहत उन्हें 37,000 रुपये की सहायता मिली जिससे उन्होंने किराना दुकान की शुरुआत की। इसके अतिरिक्त उन्होंने समूह से 10,000 रुपये ऋण लेकर एक सिलाई मशीन भी खरीदी। आज वह श्रृंगार दुकान चलाने के साथ-साथ कपड़े भी सिलाई कर रही हैं।

गुंजा देवी को पढ़ाई का अधिक अवसर नहीं मिला, वे सिर्फ हस्ताक्षर करना जानती हैं। उनके तीन छोटे-छोटे बच्चे हैं। परिवार की आर्थिक हालत कमजोर होने के कारण उन्हें वर्ष 2020 में विकास जीविका स्वयं सहायता समूह से जोड़ा गया।

गुंजा देवी बताती हैं कि जीविका से जुड़ने के बाद उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। बच्चों की पढ़ाई पहले से बेहतर हो गई है और वे अपने परिवार का भरण-पोषण सम्मानपूर्वक कर पा रही हैं। उनकी मासिक आय अब 6,000 से 8,000 रुपये के बीच है।

गुंजा देवी का कहना है कि जीविका से जुड़ना उनके जीवन का सबसे बड़ा और सकारात्मक मोड़ था। यह योजना उनके लिए आशा की एक किरण बनकर आई।

बक्सर जिला सिमरी प्रखंड के सिमरी गाँव की रहने वाली राधा देवी एक जुझारू और मेहनती महिला हैं, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी। वह वर्ष 2016 से सुहागन जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना से 19 अगस्त 2020 को जुड़ीं। पति के निधन के बाद उनका जीवन कठिनाइयों से भर गया था, लेकिन जीविका से जुड़ने के बाद उन्हें एक नई दिशा मिली है।

राधा दीदी को सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत 50,000 रुपये की सहायता राशि गाय पालन के लिए दी गई थी, लेकिन दुर्भाग्यवश गाय की मृत्यु हो गई, जिससे वे मानसिक रूप से बहुत टूट गईं। हालांकि, उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। ग्राम संगठन में शेष बची जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि और कुछ अतिरिक्त लोन लेकर उन्होंने एक श्रृंगार दुकान की शुरुआत की। दीदी ने मेहनत से दुकान को आगे बढ़ाया और फिर एक सिलाई मशीन भी खरीदी। अपनी बेटियों को सिलाई सिखाकर उन्होंने उन्हें भी आत्मनिर्भर बनाया।

इसके बाद उन्हें योजना की दूसरी किस्त मिली, जिससे उन्होंने अपनी दुकान में और सामान बढ़ाया। साथ ही उन्होंने बकरी पालन की भी शुरुआत की। आज राधा देवी के पास तीन आजीविका स्रोत हैं – श्रृंगार दुकान, सिलाई और बकरी पालन। इन तीनों से मिलाकर दीदी और उनकी बेटियों की मासिक आय 15,000 रुपये तक पहुँच चुकी है और उन्होंने लगभग 2,00,000 रुपये से अधिक की संपत्ति अर्जित की है।

आज राधा देवी संतुष्ट और खुशहाल जीवन जी रही हैं। उनके बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं। उनके परिवार को कई सरकारी योजनाओं से भी जोड़ा गया है। भविष्य में दीदी अपने बेटे के लिए फोटोकॉपी एवं स्टेशनरी की दुकान खोलने की योजना बना रही हैं, जिसके लिए तीसरी किस्त की प्रक्रिया जारी है।





सतत् जीविकोपार्जन योजना से जीवन में रोशनी : निर्मला देवी की प्रेरणादायक कहानी

दरभंगा जिला के दरभंगा प्रखंड के कंसी गांव की रहने वाली निर्मला देवी, खुशी जीविका स्वयं सहायता समूह और दिवाकर जीविका महिला ग्राम संगठन की सक्रिय सदस्य हैं। उनका जीवन कभी सामान्य गति से चल रहा था। 1 मार्च 2002 को उनका विवाह हुआ और सब कुछ ठीक चल रहा था। लेकिन एक दुर्घटना ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। उनके पति, जो इलेक्ट्रिशियन के रूप में काम करते थे, एक दिन काम से लौटते समय सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गए, जिसके कारण उनका एक हाथ काटना पड़ा। इस घटना के बाद पूरा परिवार आर्थिक संकट में धिर गया। परिवार का भरण-पोषण की जिम्मेदारी पूरी तरह से निर्मला देवी के कंधों पर आ गई। उन्होंने बच्चों की परवरिश और घर खर्च के लिए दूसरों के घरों में चौका-बर्तन का काम करना शुरू किया, लेकिन फिर भी परिवार की आर्थिक स्थिति में खास सुधार नहीं हो पाया।

इसी कठिन समय में बिहार सरकार की सतत् जीविकोपार्जन योजना द्वारा निर्मला देवी को अत्यंत गरीब परिवार के रूप में चिह्नित किया गया। इसके बाद, जनवरी 2024 में दिवाकर जीविका महिला ग्राम संगठन के माध्यम से उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान की गई। उन्हें 20,000 रुपये जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में, 7,000 रुपये जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में और 10,000 रुपये विशेष निवेश निधि के रूप में दी गई। इस सहायता का सदुपयोग करते हुए निर्मला देवी ने अपने गांव कंसी में एक किराना दुकान खोली। अपनी मेहनत और लगन से उन्होंने दुकान को धीरे-धीरे बढ़ाया। दुकान से होने वाली आय से उन्होंने बचत करनी शुरू की और साथ ही बकरी पालन का कार्य भी प्रारंभ किया।

आज निर्मला देवी की संपत्ति का कुल अनुमानित मूल्य 1,15,000 रुपये तक पहुँच चुका है। उनकी मासिक आय अब 10,000 रुपये तक हो गई है, जिससे वे अपने परिवार की आवश्यकताओं पूरा कर रही हैं। उनकी उपलब्धियों में सुरक्षित पक्का मकान, नल, ट्यूबवेल और बोरवेल जैसी जल सुविधाएँ, उज्ज्वला योजना के तहत गैस कनेक्शन, बिजली कनेक्शन और शौचालय की सुविधा प्रमुख हैं। वित्तीय साक्षरता के क्षेत्र में भी उन्होंने महत्वपूर्ण प्रगति की है। उनके पास अब स्वयं का बैंक खाता है, वे स्वयं सहायता समूह से ऋण लेती हैं और समय पर उसका वापसी भी करती हैं। अब तक वे 8,000 रुपये बचत भी कर चुकी हैं।

सरकारी योजनाओं का लाभ भी निर्मला देवी को मिल रहा है। उन्हें सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत राशन मिलता है। इसके अलावा, वे बीमा का लाभ भी उठा रही हैं। स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए उनका नाम आयुष्मान भारत योजना में पंजीकृत है। उनके पति को दिव्यांगता पेंशन भी मिलती है, जिससे परिवार को अतिरिक्त सहारा मिल रहा है।

निर्मला देवी ने अपने बच्चों की शिक्षा को भी प्राथमिकता दी है। उनके बड़ा बेटा की शादी हो चुकी है। उनका दूसरा बेटा इंटरमीडिएट की पढ़ाई कर रहा है और उनकी बेटी 10वीं कक्षा में अध्ययनरत है। भविष्य के लिए निर्मला देवी की योजना है कि वे अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाएं। वह अपने किराना व्यवसाय का और विस्तार करने और बकरी पालन को बड़े स्तर पर बढ़ाने की भी तैयारी कर रही हैं।

निर्मला देवी की यह कहानी सतत् जीविकोपार्जन योजना और जीविका दीदियों की आत्मनिर्भरता की एक सशक्त मिसाल है। उन्होंने यह साबित कर दिखाया है कि अगर सही समय पर सही अवसर और मार्गदर्शन मिले, तो महिला भी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को बेहतर कर सकती है और समाज में सम्मानजनक जीवन जी सकती है। उनका संघर्ष और सफलता आज कंसी गांव की अन्य महिलाओं के लिए भी एक प्रेरणा बन गया है।



जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन - 2, बेली रोड, पटना - 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम

- श्रीमती महुआ राय चौधरी - कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी - राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम

- श्री विकास राव - प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन - प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार - प्रबंधक संचार, लखीसराय

- श्री विप्लव सरकार - प्रबंधक संचार